॥ अर्हं ।

आत्मानंद प्रकाशः

अथ चैत्य वंदनम्.

ऋषभ अस्सी चार गणधर पांच नव्वे गण धरा, श्री अजितनाथ जिनंद सम्भव दोय ऊपर शत खरा; अभिनंद इकसौ सोल सुमति नाथ इकसौ गणिवरा, श्रीपद्म प्रभुजीके सात ऊपर एकसौ गणि हितकरा ॥ १ । सुपास नव्वे पांच नव्वे तीन-चंदाप्रभुतणा, श्रीसुविधि अस्सी आठ शीतल एक अस्सी गणि भ्रणा; श्रेयांस छहत्तर साठ अरु छी वासुपूज्य आनंदना, सगवन्न विमल पचास गणधर-चउदसा जिन अनंतना ॥२॥ त्रयचाली धर्म छत्तीस शांति कुंथु अर पण त्रय तीसा, अठवीस मल्लि अठार सुव्रत नमि सतरां गणईसा; इग्यार नेमि पास दश श्रीवीर ग्यारां गणधरा, शतचउद बाव-न मुक्ति वल्लभ आतमानंदपद वरा ॥ ३ ॥ इति॥

श्री शंखेश्वर पार्श्वनाथ जिनस्तवनम्.

(अरणिक मुनिवर चाल्या० देशी) श्रीशंखेश्वर पारस वंदिये, मन वंछित फल पूरेजी। मनवचकाया शुद्ध आराधिये, अष्ट करम होवे दूरेजी–श्री०॥१॥ यादवपति श्री कृष्ण नरिन्दना, मननी चिंता चूरीजी। जेणे प्रभुध्याया एक मन तानथी, तस आसा थई पूरीजी–श्री० ॥ २ ॥ पास संखेसर विरुद धराइयो, गाम संखेसर सारोजी। सुंदर मंदर मनडुं मोहीयुं, दुकडा बाजे सवारोजी–श्री० ॥ ३ ॥ संघपति लइ संघने आवता, यात्रु आवे अनेकाजी। दर्शन पूजन वंदन जे करे, राखो सहुनी टेकाजी। श्री० ॥ ४ ॥ धन्य धन्य प्रभु तुमपर उपकारीया, बलतो नाग बचायोजी। सेवक मुख नवकार प्रभावथी, धरणीन्दर उपजायोजी। श्री० ॥ ५ ॥ हुं अनुचर प्रभु तुम चरणा तणो, अनुग्रह मुझपर कीजोजी। जनम मरन दुख दोहग टालीने। निज संपद सुख दीजोजी। श्री० ॥ ६ ॥ ममता

भमता ॥ लाख चौरासीनो, अंत हजु नथी आव्यो-जी । करुणानिधि हवे करुणा कीजीये, दाव प्रभु मुझ फाव्योजी । श्री० ॥ ७॥ शक्ति नहीं प्रभुगुण गावातणी, पिण भक्ति वस बोलुंजी । बालक आगल जिम मायबापनी, तिम हयडुं हुं खोलुंजी । श्री० ॥ ८ ॥ पास पड्यो छे प्रभु तुम बालको, पास पासने कापोजी । सेवक वल्लभ अरजी मानीने, आतम लक्ष्मी आपोजी । श्री० ॥ ९ ॥ इति०—

(२)

तारंगा तीर्थ मंडन श्री अजितनाथ-जिन स्तवनम्.

(आबू अचलगिरि देशी) अजित जिनेश्वर भेटिये होलाल-तीर्थ तारंगा सुखकार बलिहारीरे। यात्रा करो भवि भावथी होलाल-समकित मूल आचार बलि० अजित० ॥ १ ॥ थया उद्धार पूर्वे घणा होलाल-कुमार पाल वर्तमान बलि० । कर्यों

उद्धार सुहामणो होलाल-गणधर थासे भग-
वान बलि० अजित० ॥ २ ॥ चैत्य मनोहर शोभतुं
होलाल-मेरु महीधर जान बलि० । मुक्ति स्वर्गा-
रोहणे होलाल-सोपान पंक्ति समान बलि०
अजित० ॥ ३ ॥ पांचमें आरे दोहिलो होलाल-
तीरथ दर्शन स्वल्प बलि० । पुण्य हीन पामें नहीं
होलाल-मरुधरमां जिमकल्प बलि० अजित०॥४॥
गर्भतणा परतापथी होलाल-विजया न जीत्यो
कंत बलि० । नाम ते कारण थापियो होलाल-
अजितनाथ भगवंत बलि० अजित० ॥ ५ ॥ नाम
यथारथ साचव्यो होलाल-जीति मोहनरिन्द बलि०।
अजित अजित पदवी वरी होलाल-सेवे सुरनर
इन्द बलि० अजित० ॥ ६ ॥ अजितनाथ करुणा
करो होलाल-होवे सेवक जीत बलि० । आतम
लक्ष्मी संपजे होलाल-प्रगटे वल्लभ प्रीत बलि०
अजित० ॥ ७ ॥—०इति०—

श्री गिरनारजी स्तवनम्.

(अडशो माझो-एदेशी) पूजो पूजो पूजो

भविजन पूजो, प्रभु पूजा सुखदाइ भवि० पुरुसारथ सिद्ध थाइ भवि० जनम मरन मिटजाइ भवि० शिव संपत फल पाई भवि० आंकणी–गढ गिरनारनो मंडन स्वामि, श्री नेमि नाथजी सोहे। बाल ब्रह्मचारी नेम कुमरना, दर्शन करि मन मोहे। भवि० ॥ १ ॥ नव भवनी प्रीति हती जेनी, नामे राजुल नारी। प्रेम विसारी सामुं न जोयुं, काम सुभटने मारी॥ भवि० ॥ २ ॥ वरसी दान देइ जग दाता, उत्तम पदवी धारी। श्रावण सुदि तिथि षष्ठी लीनो, संयम भवोदधि तारी ॥ भवि० ॥ ३ ॥ सहस्राम्र वन दीक्षा लीधी, एक चित्त ध्यान लगायो। घाति कर्मनो नाश करीने, केवल ज्ञान जगायो। भवि० ॥ ४ ॥ सुर सुरपति आनंद भरी आवी, समोसरण रच्यो भारे। उपकारी प्रभु धर्म उपदेशे, सांभले पर्षदा बारे। भवि० ॥५ ॥ अग्निकूणे मुनि सुरनारी, त्रीजी साधवी जानो। ज्योति भवन वनदेवी निरते, इण पति वायव मानो। भवि० ॥ ६ ॥ वैमानिक सुर कूण ईशाने, नरनारी तिण साथे। इम बारा परषदा उपदेसी, प्रभुश्री नेमिनाथे ॥ भवि ॥ ७ ॥ संघचतु-

बिंध थापी प्रभुजी, तिर्थंकर महराया । भाव जिनेश्वर पद्वी भोगी, शैलेशी पदपाया ॥ भवि० ॥८॥ गुणठाणा चउद राजलोक पण, चउद उलंघी जिनंदा । कर्मरहित सिद्ध पद्में विराजे, सेवे सुरनर इंदा ॥ भवि० ॥९॥ त्रण कल्याणक गढगिरनारे, श्री नेमिनाथना कहिये । दर्शन पूजन वंदन करीने, मनवंछित फल लहिये । भवि० ॥ १० ॥ हे प्रभु नेमिनाथ जगत्राता, आतम लक्ष्मी दाता । सेवक वल्लभ अरज स्वीकारी, आपजो शिवसुख साता । भवि० ॥ ११ ॥ —०इति०—

(३)

श्री भोयणी मंडन श्री मल्लिनाथ जिनस्तवनम्

(धारणी मनावे–एदेशी) भविजन पूजोरे श्री मल्लिनाथनेरे, इणसम नहीं जगदेव । सुर सुरपति रे नर नरपति करेरे, शुद्धमन निशदिन सेव ॥ भविजन० ॥ १ ॥ प्रभुमुख सोहेरे शारद चंदलोरे.

कलंक नहीं लवलेस। जस काम राहुरे ग्रसतो नहीं कदारे, एप्रभु गुण छे विसेस। भविजन० ॥ २ ॥ शांत रस भर्यारे नेत्रकमल अछेरे, भवि-मन मधुकर जेम। उडी नवि जायेरे केमे उडावतांरे पिये गुण मकरंद जेम। भविजन० ॥ ३ ॥ धन्य ते नयणांरे प्रभुमुख जोवतांरे, धन्य गुण गाती जबान। धन्य ते करनेरे जेणे प्रभु पूजियारे, धन्य मनशुभ प्रमान ॥ भविजन० ॥ ४ ॥ प्रभुपद महिमारे जग घणी विस्तरीरे, सज्जन हृदय समान। यात्रुआवेरे देश विदेशथीरे, भक्ति करे बहु सन्मान ॥ भवि-जन० ॥ ५ ॥ भोयणी मंडनरे जगदुख खंडनोरे, लली लली करुंछुं प्रणाम। अष्ट करमरे खंडन कीजीयेरे, मंडन निज गुण धाम। भविजन० ॥ ६ ॥ हुं प्रभु आव्योरे तुमचरणी पन्योरे। राखो शर-णागत लाज। निजसम कीजोरे एछे मांगणीरे वल्लभ आतमराज। भविजन० ॥७॥—०इति०—

(४)

श्री अष्टापद तीर्थ स्तवनम्.

(गरवानी देशी) अष्टापद आदिजिनंदजी, दर्शन

चित्त हुलसाय साहेब सांभलजो । अतिशय लब्धि कोईनथीजी, दर्शन किमकरि थाय साहेब० ॥ १ ॥ पांख नहीं आवुं उडीजी, सुरनी नहीं पण सहाय साहेब० ॥ विद्याधर मिलता नथीजी, मन मारुं अकुलाय साहेब० ॥ २ ॥ गजवर मनरेवा वसेजी, वाछरडा मन माय साहेब० ॥ चातक चाहे मेहलोजी मन मारुं जिनराय साहेब० ॥ ३ ॥ भरत बनाव्या रत्ननाजी, तीर्थंकर समकाय साहेब० ॥ निजि निज वर्णे थापियाजी बिंब भला जिनराय साहेब० ॥ ४ ॥ चार आठ दश दोय छेजी, वंदन मन लउचाय साहेब० ॥ जन्म सफल छे तेहनोजी, पूजे प्रभुना पाय साहेब० ॥ ५ ॥ वीरजिनंद प्रभु एकदाजी, आवे पर्षदामाय साहेब० ॥ भूचर निजलब्धे करेजी, यात्रा उपर जाय साहेब० ॥ ६ ॥ तिणभव मुक्ति ते वरेजी, एमां शंका न कांय साहेब० ॥ सांभली गौतम आवीयाजी, वांदे मन वच काय साहेब० ॥ ॥ ७ ॥ पंदरसो तापस तपेजी, देखी मन हर्षाय साहेब० ॥ गौतमने गुरु थापीयेजी, सहुना मनमां भाय साहेब० ॥ ८ ॥ दीक्षा लइ गुरु थापियाजी, गौत-

म महामुनिराय साहेब० ॥ वीरवंदनने आवताजी केवल ज्ञान उपाय साहेब० ॥ ९ ॥ एम अनेके सिद्ध थयाजी आठे कर्म खपाय साहेब० ॥ सादि अनंत पदवी वरीजी पुनरागमन मिटाय साहेब० ॥ १० ॥ शक्ति नथी आववातणीजी भक्ति वशे गुणगाय साहेब० ॥ आतम लक्ष्मी आपजोजी वल्लभ शिव सुख थाय साहेब० ॥११॥०–इति०–

श्री आबूराज तीर्थ स्तवनम्

(गरबानी देशी.)

हुंतो सिमरुं सदा आबूराजने जो । छोडी काम अने वळी काजने जो–हुंतो ॥ १ ॥ आबूतीरथ अति रालियामणो जो, पूरे मनना मनोरथ साजने जो–हुंतो० ॥२॥ देलवाडे देरासर चार छे जो–ऋषभदेवजी सुधारे काजने जो–हुंतो० ॥३॥ नेमनाथ स्वामीने सेवीये जो–जावे मदन कदन बल भाजने–जो–हुंतो०॥४॥ देराणी जेठाणीना गोखला जो–जोई मननी टले सहु खाजने जो–हुंतो०॥५॥ श्री ऋषभ

धातुमय देहरो जो-नमुं चौमुख चार जिनराजने जो-हुंतो०॥६॥ गढ अचलमें देवल दीपतुंजो-वांदु ऋषभ गरीबानिवाजनेजो-हुंतो० ॥७॥ शांतिनाथ प्रभु करे शांतिनेजो-चूरे अष्ट कर्म समाजनेजो-हुंतो०॥८॥ प्रभु महावीर कोरिया गाममें जो—नमुं शासन पति शिरताजनेजो-हुंतो०॥९॥ प्रभु नामथी धामने वंदनाजो-जग तीरथ तारण जहाजनेजो-हुंतो०॥१०॥ भेट्यो तीरथ आतम पावनोजो-तारो वल्लभ सेवक अपाजनेजो-हुंतो०॥११॥ संवत ओगणीसो छासठ जेठनोजो-गुरुवार अष्टमी धान्य आजनेजो-हुंतो० ॥१२॥ इति

श्री आबूराज तीर्थ स्तवनम्

(मल्ली जिन नाथजी व्रत लीजेरे एदेशी)

सेवो भवि आदिनाथ जगत्रातारे—आबू मंडन सुखदाता-सेवो० अंचली-प्रभुचार निक्षेप सोहेरे-नाम स्थापना द्रव्य भाव मोहेरे-तत्व सम्यग् दृष्टि बोहे-सेवो० ॥ १ ॥ प्रभु नाम नाम जिन कहियेरे-स्थापना जिन पडिमा लहियेरे। द्रव्य जीव

जिनेश्वर गहिये–सेवो० ॥ २ ॥ समवसरणमें भाव जिनंदारे—शोभे उडुगणमें जिम चंदारे। टारे जन्म मरण भवफंदा–सेवो० ॥ ३ ॥ प्रभु मूर्ति प्रभु सम जानीरे–अंगीकार करे शुभ ध्यानीरे । गतो मोक्ष तनी छे निशानी–सेवो० ॥४॥ नहीं हाथ धरे जप-मालारे—नहीं नाटक ओढ़ना चालारे। प्रभु निर्मल दीन दयाला—सेवो० ॥५॥ नहीं शस्त्र नहीं संग नारीरे–प्रभु वीतराग अधिकारीरे । जग जीवतना हितकारी–सेवो० ॥६॥ मुद्रा प्रभु शांत सुधारीरे–आतम आनंद सुखकारीरे । वल्लभ मन हर्ष अपा-री—सेवो० ॥७॥ —०इति०—

(७)

पांच तीर्थनुं स्तवन.

(जिनराजाताजा—देशी)

भविसेवो भावे पांच तीर्थ सुखकारीया–पांच तीर्थ सुखकारीया हारे दुखहारीया भवि० अंचली तीर्थ सेवासे भवि निर्मल समकित दृढतर थावे। निर्युक्ति में चउद पूर्वी भद्रबाहु फरमावेजी भ.वि० ॥ १ ॥ वर-

काणां पारस प्रभुसोहे भविजनके मनमोहे। जय जयकार वदे मुख अपने कर्म सुभटको खोहेजी। भवि०॥२॥ नाडोल नगरे पद्म प्रभुजी नेमि नाथ ब्रह्मचारी। शांतिनाथ शांतिके करता जिरावला बलिहारी॥भवि०॥३॥ नाडलाइमें श्री शत्रुंजय श्री गिरनार सुहावे। श्रावक दर्शन दृढता निर्जर सम्याग् दृष्टि बनावेजी॥भवि०॥४॥श्री जिनमंदिर अनुपम सुंदर जहां प्रभु ऋषभ विराजे। मंत्र प्रभाव उडाया मुनिने मंत्र यंत्र वहां साजेजी॥भवि० ॥५॥ शांतिनाथ श्री नेमि जिनेश्वर अजितनाथ सुखकारी। श्री सुपार्श्वजिनदो मंदिरमें ऋषभदेव हितकारीजी॥भवि०॥६॥ गोडी पार्श्वने वासु पूज्यजी इम एकादश थावे॥ यात्रा करी प्रभुके गुण गावे कर्म कठीन खपावेजी॥ भवि०॥७॥ नंदि वर्धन नृपका मंदिर रचना नाना प्रकारी। मुछाला महावीर विराजे मोह सुभट गया हारीजी॥भवि०॥८॥ घाणेरावमें आदिनाथजी कुंथुनाथ सुखदाता। शांतिनाथ अभिनंद जिनंदा धर्मनाथ जगत्राताजी॥ भवि०॥९॥ जीरावलाने श्री चिंतामणी गोडी पार्श्व

प्रभु प्यारा । आनंद कंद जिनंदजी भेटी आवा गमन निवाराजी ॥ भावि ॥ १० ॥ श्री चिंतामणी पार्श्वप्रभुजी चिंता मनकी चूरे । नगर सादडी दर्शन करके मन वंछित सवपूरेजी ॥भवि०॥११॥ रागकपूर मंदिरकी रचना देखी आनंद थावे॥ आदिनाथ प्रभु यात्रासे मन भविजन अति सुख पावेजी ॥ भावि ॥१२॥ तपगच्छ नायक विजयानंद सूरि सुप्रसाद गुण गाया । ओगणीसो छासठ वैसाखे वल्लभ मन हरपायाजी ॥भवि० ॥१३॥ –०इति०–

(८)

आनंदजी जयजयकार कराया.

(पंजावी देशी.)

जिनंदजी आज दर्श तुम पाया–चरण शरण प्रभुमैं तुम आया—काटो कर्मके फंदजी— दुख दंदजी–जिनंदजी० ॥१॥ जयजगदीश जिनेश्वर राया निशदिन सेवुं मै तुमरे पाया–सेवें सुरनर वृंदजी–हुलसंदजी–जिनंदजी०॥२॥ तुम मुझ पालक तुम मुझ ताया–तूम मुझ वत्सल तूम मुझ माया–तूम मुझ मन

अरविंदजी० दिन इंदजी जिनंदजी ॥३॥ कर करुणा करुणाकर राया—पूरव पूण्य उदय तुम पाया—दर्शन आनंद कंदजी अभिनंदजी जिनंदजी० ॥४॥ तुम जग रक्षक मुझ मन भाया—तारण तरण बिरुध राया—सेवक तारो आनंदजी—अमंदजी—जिनंदजी० ॥५॥ धन्य धन्य आजका दिन सवाया—भलेभाव उठ प्रभु गुण गाया — देखी मन विकसंदजी—जिनचंदजी जिनंदजी० ॥६॥ विजयानंद सूरि सुपसाया—जग वल्लभ प्रभुका गुण गाया—संघ सकल आनंदजी—पढे छंदजी—जिनंदजी० ॥७॥ —०इति०—

(९)

श्री वडोदरा मंडन श्री चिंतामणि पार्श्व जिनस्तवन्—

(मल्ली जिननाथजी व्रत लीजेरे० एदेशी)

चिंतामणि पासजी सुखकारीरे—करे सेवा नित नर नारी—चिं० आंकणी॥ चिंतामणि चिंता चूरोरे मन वंछित आशा पूरोरे—करो दुख दोहग सब

दूरो—चिं० ॥१॥ प्रभु त्रण जगतना स्वामीरे—घट घटनां अंतर जामीरे जग पुरिसादानी सुनामी—चिं० ॥ २ ॥ प्रभुनामथकी निस्ताररे—भावे पामे भवनो पाररे—मिटे जनम मरण संसार—चिं० ॥३॥ काम कुंभ धेनुमणि रायारे—सुर वृक्ष समाजग गायारे— पिण फलमां अधिकछे दाया—चिं० ॥४॥ एतो सुख संसारी आपेरे—प्रभु पास पासने कापेरे—जइ मुक्ति पुरीमा थापे—चिं० ॥५॥ मन वच काया भवि पूजोरे—दुनियामा देव न दूजोरे—नासे राग द्वेष मन रूजो—चिं० ॥ ६ ॥ बडोदा पीपला सेरी पायारे—दर्शन आतम रंग छायारे—करो वल्लभ हर्ष सवाया—चिं० ॥७॥ —०इति०—

श्री केशरीयानाथ ऋषभदेव जिन स्तवनम्.

(चाल नाटक)

प्रसिद्ध प्रताप जगतमें घणो—थयो नाथ केशरीयाजी तणो। सुरा सुरनर पति गुणने गणो—नहीं

पार पामें गमे ते भणो ॥१॥ करूं शी शोभा प्रभु ताहरी—नहीं शक्ति एती प्रभु माहरी। कहुं पिण भक्ति तणे वसपरी—लवे जिम बालक मति आ· सरी ॥२॥ अति दूरथी जन आवे धसी—करे तन मन प्रभु सेवा हसी। वंदन प्रभु मन लगन वसी—खुशी होवे देखी चकोर जिम ससी ॥ ३ ॥ अजर अमर अज अविनाशी—चिदानन्द सद्रूप पर· कासी । प्रकाश करो कटे भव फासी—मटे जन्म मरणनी दुख रासी ॥४॥ उदय पुण्य जे प्रभु दर्शन करे—निजात्म लक्ष्मी भवी ते वरे। होवे दर्श प्रभु मन हर्ष धरे--सरे काम वल्लभ चरणी परे ॥५॥

—०इति०—

श्री सीमंधर जिन स्तवनम्.

(देशी भजनीयोंकी)

श्री सीमंधर जिनराजजी प्रभु अर्ज सुनो इक म्हारी प्रभु० अंचली—तुम दर्शनको चित्त हुल- सावे-देव मदद देवा नहीं आवे-यहां बैठा विनवुं हुं भावे-मानो अर्ज महाराजजी. मैं शरण लई है

भारी- प्रभु० ॥१॥ पांचमें आरे हुं प्रभु जायो-
दुषम काल महा दुख पायो- अतिशय् ज्ञानी
कोई न सहायो-सिद्ध करूं किम काजजी-चिंता
मनमें है भारी-प्रभु० ॥ २ ॥ कर्म प्रभु मुझ पाछे
लागे-पाप कराते है वो आगे-पिण अब भाग्य
प्रभु मुझ जागे-जान्यो गरीब नवाजजी-दिलमें
लियो धार विचारी प्रभु० ॥३॥ भावधरी प्रभु नमन
करत हुं-चरण शरण प्रभु मनमें धरत हुं-वार २
प्रभु पांव परतहूं-ज्ञान ध्यान शिरताजजी—
अवधारो जग हित कारी- प्रभु० ॥ ४ ॥ सम्यग्
दृष्टि सुर सुर नारी-साधर्मी वत्सल दिल धारी-
कीजो अर्ज प्रभुको म्हारी-तारण तरण जहा-
जजी-प्रभु शिव सुख पद दातारी-प्रभु०
॥ ५ ॥ दीन दयाल दया कर स्वामी-आतम-
लक्ष्मी शिव सुख धामी- आतमरूप आनंदपद
पामी-सेवक दीन अपाजजी-वल्लभ मांगे भव
पारी-प्रभु० ॥६॥ —०इति०—

मुझाया पासजी प्रभु पूजो, ऐसो देव नहीं जग

दूजो– मुं० आंकणी–अश्वसेन वामा देवी जाया–सुरगिरि सुरपति नवराया—देव देवी मिली हुलराया मुं० ॥ १ ॥ लेइ दीक्षा कर्म खपाया—जग पुरिसादानी कहाया–गिरि सम्मेद मोक्ष सधाया–मुं० ॥ २ ॥ प्रभु मूर्ति मोहनगारी–भवि जन को आनंद कारी–दुख दोहग दूर निवारी मुं० ॥ ३ ॥ दर्शन इछा मन धारी–कियो श्रावक तप उजयारी–दियो दर्शन स्वप्न मझारी–मु० ॥४॥ बन्यो मंदिर देव सहाई–सुरनर नारी गुण गाई–प्रभु पारस शिव सुख दाई–मुं० ॥ ५ ॥ हुओ तीर्थ अपूरव थारो–कियो संघने जीर्ण उध्धारो–ओगणीसो बासठ विचारो–मुं० ॥ ६॥ श्रावक देश देशथी आवे–मग सिर सुदि तेरस भावे–करी यात्रा परम सुख पावे–मुं० ॥ ७ ॥ पाया दर्शन धन्य दिन आज तारो सेवक गरीब निवाज-आतम लक्ष्मी शिव-राज–मुं० ॥ ८ ॥ ओगणीसो छासठ आया–पंचमी वैशाख सुहाया-वल्लभ मन हर्ष सवाया—मुंः ॥ ९ ॥

—०इति०—

अथ श्री सिद्धगिरिराज स्तवनं.

(आशा.)

श्री विमलाचल तीर्थ सुहंकार,—भवोदधि तारण हाररी: अंचली.। द्रव्य भाव से तीरथ जानी, लौकिक लोकोत्तर पिछानी; परमारथ शुभगेह भवि प्रानी; ज्ञान ध्यान शुभ धाररी—श्री विमला० ॥१॥ अष्टापद आबू गिरनारी; समेत सिखर चंपापुरी सारी; पावापुरी शत्रुंजय धारी; सिद्धगिरि सब सरदाररी—श्री विमला० ॥ २ ॥ नेमि नाथ विन जिन तेवीशा; समवसरे सहु विमलगिरीशा— ऋषभदेव आए जगदीशा; पूर्व निन्यानवे वाररी— श्री विमला० ॥ ३ ॥ शांतिनाथ पुंडरिक गणधारी; पुंडर गिरि तीरथ बलिहारी; धन्य धन्य यात्रा करे नरनारी; जन्म मरण दुःख टाररी. । श्री विमला० ॥४॥ राम भरत पांडव बलवंता; थावच्चासुत शुक गुणवंता; कर्म खपी हुए सिद्ध भगवंता; आव गमन नेवाररी । श्री विमला० ॥५॥ द्राविड वारीखिल्ल तिलक संता, देवकी षट नंदन मुनि संता; इत्यादि

हुए सिद्ध अनंता; सिद्धाचल सुख कारी. । श्री विमला० ॥३॥ भावधरी तीरथ गुण गावे; आतम लक्ष्मी भविजन पावे; विजयानंदसूरि पद थावे; वल्लभ हर्ष अपाररी. । श्री विमला० ॥७॥ इति०—

अथ श्री पार्श्वनाथ जिनस्तवनं.

(आशा)

पार्श्वजिनंद सुखकाररी—अश्वसेन कुल दिनकर प्रगट्यो पा । अंचली. ॥ पोसवदि दशमी तिथि सारी; जन्मे पारस प्रभु अवतारी; वामानंदन जाऊं वलिहारी; नाथ जगत आधाररी. अ० । १ ॥ छप्पन दिक् कुमरी मिल आवे; महिमा जन्म करी हर्षावे; सोहमपति मेरु लेजावे; इन्द्र मिले सठ चाररी. । अ० ॥२॥ अष्ट द्रव्य पूजन सुखदाई, करके भावे गावे वधाई; नंदीस रजा करण अठाई; बोलत जय जय काररी. । अ० ॥३॥ धन्य धन्य धन्य प्रभु पारस नामी; त्याग जगत हुए त्रिभुवन स्वामी परमातम आतमपद धामी; वारी जाऊं वार हजा-

री. । अ० ॥४॥ घडी घडी पल पल छिन छिन ध्याऊं; मनसें प्रभुगुण वचनसें गाऊं; बार बार तोहे सीस नमाऊं; पाऊं भवोदधि पाररी. । अ० ॥५॥ शर रस अंक इंदु शुभ साले; दर्शन पाये गुजरांवाले; दुःखदोहग प्रभु पारस टाले; आतम वल्लभ ताररी. अ० ॥ ६ ॥ —०इति०—

अथ श्री पार्श्वनाथ जिनस्तवन्.

(भैरवी.)

पार्श्व प्रभु जग तारन. तरन तारन, तरन दुःखदोहग हरनजी—पा-अंचली० वीतराग प्रभु पुरुषादानी; ज्ञानी ध्यानी दानी सरन.।पार्श्व० ॥१॥ रंक राय सब एक सरीखे; जिम तरणि शशि गंगा जरन. । पार्श्व० ॥२॥ तिम तारक प्रभु भविजन केरे; जो शुभ भावे गहे प्रभु चरन. । पार्श्व० ॥३॥ मन मधुकर प्रभु गुण सुमन विन; दिवस रैन नहीं चैन धरन.। पार्श्व० ॥४॥ गुजरांवाल दयाल निहाली; वल्लभ आतम चरन परन. पार्श्व० ॥५॥ इति०—

अथ श्री चंद्रप्रभु जिनस्तवनं ।

(चाल पणिहारीकी)

आमेर पुरी रलियामणो प्रभु प्याराजी सुखकाराजी जिनमंदिर मनोहार प्याराजी । चंद्र प्रभु स्वामी तणी-प्रभु प्याराजी-प्रतिमा तारणहार प्याराजी ॥१॥ चंद्र किरण सम उज्जलि प्रभु प्याराजी मोती सम झलकंत प्याराजी । भविजन तारण कारणे-प्रभु प्याराजी-शुकल ध्यान धरंत प्याराजी. ॥२॥ चन्द्र प्रभु जिन आठमा; प्रभु प्याराजी; आठ कर्म किये दूर प्याराजी । सिद्ध आठ गुण पामिया प्रभु प्याराजी. आतम गुण भरपूर-प्याराजी. ॥३॥ दक्षिणपासे दीपता-प्रभु प्याराजी-सुखाला महावीर-प्याराजी-वामे पासे शोभता-प्रभु प्याराजी-आदिनाथ जगधीर प्याराजी-॥४॥ पूजा अष्टमहीपकी-प्रभु प्याराजी-ऋषभादि जिनराय-प्याराजी-। शास्वती जिन प्रतिमा तणी-प्रभु प्याराजी करी भविजन हर्षाय-प्याराजी ॥५॥ उन्नीसौ पैंसठमें-प्रभु प्याराजी; आतम संवत तेर-प्याराजी । जयपुरथी संघ आवियो-प्रभु प्याराजी-यात्रा

करन आमेर—प्याराजी ॥६॥ माघ सुदि तृतीया रवि-प्रभु प्याराजी; प्रभु दर्शन आनंद प्याराजी- आतम लक्ष्मी संपजे प्रभु प्याराजी ॥ वल्लभ हर्ष अमंद—प्याराजी ॥७॥ —०इति०—

अथ श्री जिन रथयात्रा महोत्सव स्तवनं.

(चाल होरी.)

भविजन आनंदकारी, कियो संघ उत्सव भारी-(आंचली.) जयपुर नगर मनोहर सुंदर, रचना विविध बजारी; जिन मंदिर रथ यात्रा उत्सव शोभा अपरंपारी-धर्म जिन जग जयकारी-भवि० ॥१॥ जय जय श्री जिन देव सुहंकर; अष्टादश दोष जारी; चौंतिस अतिशय-पैंतिस वाणी, बार प्रभु गुण धारी; । सेवे सुर चार प्रकारी. । भविजन० ॥२॥ हे प्रभु दीनदयाल दयानिधि; करुणा रस भंडारी; विधि विष्णु शिव शंकर स्वामी-

वीतरागपद धारी–वारि जाऊं वार हजारी। भवि० ॥ ३ ॥ रथयात्रादि जिनोत्सव करना; धर्म प्रभावना सारी–श्रावक धर्म प्रभावक कहिये, जिन शाशन बलिहारी, श्रावकजन शुद्धआचारी। भवि० ॥४॥ वीर संवत चौवीसो पैंतीस; आतम तेर वि-चारी; । ओगणीसो पैंसठ छठ सातम—माघतिथि उजियारी–आतम वल्लभ भवपारी–भवि० ।५। इति॰

अथ श्री जैपुरमंडन जिनराज स्तवनं॰

(चाल माढ॰)

थारी लईरे सरण जिनराज आज मुझ तारो तो सही॰ । तारोतो सही म्हारा प्रभुजी तारोतो॰ अंचली॰ ॥ ऋषभ जिनंद आनंद सुखकंदा प्यारो-तो सही । नूतन जिनघर आप विराजो सारोतो सही–थारी॰ ॥ १ ॥ पंचायती मंदिर सुंदर मनहारो तो सही–सुपार्श्वनाथ महाराज अर्ज अवधारोतो सही । थारी॰ ॥२॥ तपगच्छ मंदिर अंदर प्रभु पद धारोतो सही । श्री सुमतिनाथ जगनाथ अनाथ

निवारोतोसही । थारी० ॥३॥ विजयगच्छ मंदिर दुखहर सुखकारोतो सही; । श्री ऋषभ देव करे सेव सुरासुर चारो तो सही- । थारी० ॥ ४ ॥ मोहन वाडी चरन ऋषभ जिन धारो तो सही- । स्टेशन मंदिर प्रभु ऋषभ देव दुःखहारो तो सही- थारी० ॥५॥ श्रीमाली मंदिर पारस अघ टारो तो सही; । पद्म प्रभुजी घाटवाट शिवद्वारो तो सही- थारी० ॥ ६ ॥ चंद्र प्रभु आमेर पुरी उपगारो तो सही; । खोगाल सुपारस नाथ अनाथ आधारो तो सही- थारी० ॥ ७ ॥ दादावाडी पार्श्व प्रभु हित कारो तो सही; । जिन ऋषभ वीर सांगानेरे भवहारो तो सही- थारी० ॥ ८ ॥ अंदर बाहिर जयपुर नगर विचारो तो सही; प्रभु दर्शन वल्लभ आनंद हर्ष अपारो तो सही-थारी० ॥ ९ ॥

अथ श्री खोहामंडन पार्श्व जिनस्तवनं

(आनंदजीजय २ कारकराया- चाल.)

आनंदजी सब जनके मन भाया;-यात्राकरनको चलकर आया-भेटे भाव अमंदजी-जिनचंदजी—

आनंदजी–सबजनके मन भाया– आ० अंचलि० । धन धन आजका दिन सुहाया; । पुण्य उदय प्रभु दर्शन पाया– कटे पापके फंदजी–दुःखदंदजी– आनंदजी–सबजनके मन भाया; आनंदजी० ॥२॥ धन धन ते नरनारी कहाया; दर्शन कर तनमन हरपाया; परमानंद लहंदजी; सुखकंदजी; आनंदजी– सवजनके मन भाया– आनंदजी० ॥ ३ ॥ जयजगदीश जिनेश्वरराया; निशदिन सेवुं मे तुमरे पाया; सेवे सुरनर वृंदजी; हुलसंदजी; आनंदजी– सवजनके मन भाया–आनंदजी० ॥४ ॥ तुम जगतात तुम्ही जगमाया; आतम आनंद निज पद पाया; वल्लभ मन विकसंदजी–पढे छंदजी; आनंदजी–सवजनके मन भाया० ॥ ५ ॥ इति.

अथ श्री खोहामंडन पार्श्व जिनस्तवनं.

(आनंदजी जयजयकार कराया चाल)

उमंगजी श्री संघकू अंगछाये, यात्राकरनको त्रिसहुलसायो–जैसे निर्मल गंगजी–मनचंगजी–

उमंगजी– श्री संघके अंगछायो–उमंगजी० ॥१॥ जयजय श्री प्रभु पार्श्व जिनंदा; उडुगणमें जिम शोभत चंदा; कियो भंग अनंगजी; मन रंगजी; उमंगजी; श्री संघके अंगछायो–उमंगजी० ॥२॥ तारक सुख कारक जिनराया; दीपक सम तम दूर कराया; जारें पाप पतंगजी; उछरंगजी– उमंगजी श्री संघ० ॥ ३ ॥ संवत उन्नीसो पैंसठ जानो; फागण वदि एकादशी मानो; खोहा पहाड सुरंगजी; उल्लंघजी; उत्तंगजी–श्री संघके अंगछायो— ॥ ४ ॥ जयपुर शहरसे श्रीसंघ आयो; पूजा सेवा ठाठ बनायो; लायो ध्यान उत्तंगजी–शिवसंगजी— उमंगजी० ॥५॥ हे जिन निजपद आतमदाता; वल्लभ भविजन मांगत साता; देवो सुख अभंगजी नीरंगजी–उमंगजी श्री संघके अंगछायो० ॥६॥इ०

श्री शांतिनाथ जिनस्तवनं.

(चाल–होई आनंद बहार—)

धन धन धन दिन आजरे–प्रभु दर्शन पाये—

दर्शन पाये–पाप नशाये–धन धन धंन दिन आजरे प्रभु० अंचली ॥ शांतिनाथ प्रभु शांति के करता–हरता कर्म समाजरे–प्रभु० ॥१॥ विश्वसेन अचिरा जीके नंदन–सेवे सुरनर राजरे–प्रभु० ॥ २ ॥ नगर बिनौली आप पधारे–जय जय जय जिनराजरे–प्रभु० ॥ ३ ॥ तरण तारण प्रभु बिरुद धरावो–तारो गरीब निवाजरे–प्रभु० ॥ ४ ॥ आत्मलक्ष्मी प्रभु मुझदीजे–तुम वल्लभ सिरताजरे–प्रभु०॥५॥ इ०

(चाल नाटक–करो पार नैया मोरी)

श्री शांतिनाथ स्वामी करुं अर्ज सीसनामी–टेक.

प्रभु शांति शांति करता। दारीद्र दुःखहरता, निर्दोष निष्कामी–करुं अर्ज० ॥१॥ संसार दुःख-खानी; खानी सुखोंकी मानी, अज्ञान संगपामी–करुं अर्ज० ॥ २ ॥ योवन रंग छायो; । विषयों में मन लगायो–कीनी न नेकनामी–करुं अर्ज० ॥ ३ ॥ प्रभु मैं हूं क्रोधी मानी; लोभी महा अज्ञानी; नहीं राग द्वेष खामी–करुं अर्ज० ॥ ४ ॥ गुरु देवको न जान्यो; नहीं धर्मको पिछान्यो–अवगुणक्या बदामि

करुं अर्ज० ॥ ५ ॥ अब पुण्य उदय आयो. । प्रभु दर्श तुम पायो; । मिथ्यात्व दीनो वामी–करुं अर्ज० ॥ ६ ॥ तारो प्रभु कृपालु; तुम दीनके दयालु; करुणा सुधाके धामी–करुं अर्ज० ॥ ७ ॥ सुरनर मुनीन्द्र ध्यावे; । स्वर्गापवर्ग पावे; प्रभु शान्ति अर्चयामि–करुं अर्ज० ॥८॥ शान्ति आनंद दीजे. । सेवक शांति कीजे, वल्लभ आतमरामी–करुं अर्ज० ॥ ९ ॥ —०इति०—

(चाल नाटक. धन २ वो जगमें).

धन धन वो जगमें नरनार–पूजा करन करानेवाले. । अं । राय पसेणी सूत्र मझार–पूजा वरनी सतरां प्रकार; । सूर्याभ देवता करण हार. । श्री गणधर फरमानेवाले. । धन धन० ॥ १ ॥ जीवाभिगम सूत्र है सार–विजयदेवताका अधिकार–शाश्वत जिनमंदिर विस्तार । जैनशास्त्र बतलानेवाले–धन धन० ॥२॥ आनंद सातमें अंग विचार; ज्ञाता उवाइ भगवती धार, द्रौपदी अरु अंबड अनगार– ये सब मोक्षके जानेवाले– धनधन० ॥ ३ ॥ इत्यादि जैन शास्त्र रसाल; जिन प्रतिमाका

वर्णन भाल-पूजा करे तुम दीन दयाल. । है मुक्तिफल पानेवाले- धन० ॥ ४ ॥ आतम आनंद रसमें लीन; कारण कारज समझ यकीन वल्लभ प्रभुके है आधीन. । प्रभुको सीस नमाने वाले. धन २ ॥ ५ ॥ —०इति०—

(चाल नाटक-जैसाकरना वैसा भरना.)

प्रभु उपगारी जग हितकारी, शिवसुखकारी, शिवसुखदे,। दीनदयाल दयाकर स्वामी-दर्शन अपना मुझको दे. । तुम दर्शनसें आनंद होवे-परमानंदपद मुझको दे. । तुमहो तारक-दुःखके हारक सुख कारक-सुख मुझको दे । पुण्य जो किया, दर्श तुम लिया; चर्ण चित्त दिया, खुशी मेरा जिया खुशी यही हमे, वसे हैं दिल तुमे, वल्लभ प्रभु नमे. २ आतमराम शिव सुखदे-आतमराम शिवसुखदे. प्रं० ॥ इति ॥

(चाल नाटक-तेरी छलबल.)

प्रभु पूजा है प्यारी-भव पार उतारी-करो शास्त्रानु सारी-प्यारे सुजान. । मानोजी सुज्ञान-

प्रभु पूजन बनावो-१.जनसें शुभ फल पावो मेरी आन-करो पूजा भगवान-धरो सुमतिका ध्यान-करो आतम कल्याण-होवे वाह वाह वाह-३. -इति-

(चाल नाटक-सहजादेकीशादीका.)

आहा कैसा रूप बनाहै-सुंदर श्री श्री जिनवरका. धनधन जग वो नरनारी-जो करते दर्शन जिनवरका. सीस नमावे आकर भावे-चरननननननन झुक झुक झुक-तनमनधनसें सेवा करते-घडी घडी पल पल छिन छिन-घडी घडी पलपल छिन छिन-छिन. छिन आतम वल्लभ हे श्री जिन. गाऊं निशदिन पलपल छिन. आ. १ ॥ इति ॥

(चाल नाटक-बागहरा.)

पास खरा-नजर परा-दुखहरा-जयजय हे भगवन्.-मानो मुजरा-चरणपरा-सरन धरा-नहीं विसरा-विसरा-विसरा-नहीं. कटो दुःख मेरा. कृपा करीने देवो आनंद-मेरी-भारी यही अरज जरा मिटे-लगनहै तेरी-आतम वल्लभ बने खरा-१ इति

(चाल नाटक—आहा मेरा घोडा.)

आहा प्रभुकी सूरत कैसी—दिखती मुझको सुखकारी—सुखकारीहै—दुःखहारीहै—भव भव में हितकारीहै—वारिजाऊं—वारिजाऊं—आहा—आहा—आहा—हा—नहीं कोई प्रभुकी सूरत जैसी—ऐसीहै तो दिखलाना—भजो प्रभु तुम—आतम वल्लभ तुम होवो होवो तुम—१ —०इति०—

अथ श्री जयपुर पंचायती मंदिर मंडन श्री शांति जिनस्तवनं॥

(चाल—श्री शांतिनाथ महाराजके चरणोंमें चित्त०)

श्री शांतिनाथ भगवानका; दर्शन तन मन सुखकारा; अंचली० ॥ प्रभु दर्शनसे अघमिट जावे; वंदनसें मन वंछित थावे; पूजनसें शिवसुख फल पावे; सुरतरु सम भगवानका—पूजन हित सुखकरतारा—श्री शांति० ॥ १ ॥ विश्वसेन अचिराजीके जाया; मृगलंछन प्रभुचरण सोहाया; कंचन वरणी कोभे

काया; मेरुगिरि भगवान्का—होया जन्म महोत्सव भारा—श्री शांति० ॥२॥ भव रागी नहीं, संयम रागी; शिवत्यागी नहीं भवके त्यागी; ज्ञान चरण दर्शन श्रुति लागी; जोर अपूर्व सुध्यानका—किये घाती कर्म क्षय चारा० । श्री शांति० ॥३॥ सम-वसरण रचना सुरकीनी; देशना प्रभु अमृतरस-दीनी; शिवपुरकीडिगरी भवि लीनी; जोर घटा मोहरानका—प्रभु तारे बहु नरनारी—श्री शांति० ॥ ४ ॥ च्यारकल्याणक गजपुर नगरे; मोक्ष गये प्रभु समेत शिखरे; लागी लगन जिम केतकी भमरे; फल शुभ प्रभु गुणगानका— मिटे तन मन मदन विकारा- श्री शांति० ५ ॥ खड्गासन प्रभु आप विराजे; मंदिर पंचायती छबिछाजे; नमनकरे भविजन सुखकाजे—दाता निजपद दानका—प्रभु आतमराम आधारा—श्री शांति० ॥६॥ उगणीसो पैंसठके वरसे; जयपुर दर्शन कियो प्रभु हरसे; दर्शन करसे ते भवि तरसे; अनुभव अमृत पान-का; वल्लभ मन हर्ष अपारा—श्री शांति०॥७॥इति-

(चाल नाटक—जावोजी जावो किसनादानको.)

गावोजी गावो प्रभु पासके गुण गानेवाले—शिव सुखके पानेवाले- भव दुःख मिटाने वाले—मुक्तिमे जाने वाले—फिर भव नहीं आनेवाले—गावोजी गावो प्रभुपासके गुण गानेवाले— प्रभुको आज प्यारे नयनोंसे आन देखा सुखका भंडार प्रभु गुण का न मान देखा फिरया मैं जग सारे—कर्मोंने मार मारे—दिये हैं दुःख भारे—सरणा तुमरा अब धारे जगहित कारी— प्रभु उपगारी—दुख निवारी—आनंद धारी—हो वल्लभ गुण गाने वाले—गावोजी गावो० ॥ १ ॥ —०इति०—

(चाल नाटक—पडूं मैं तोरे पैया)

तारो जिनजी-तारोजी मेरे जिनजी—भुलावो नहीं मुझको—प्रभु धारलिये गुण बारी दिये दोष अठारा निवारी—निवारी मेरे जिनजी—उपगारी मेरे जिनजी—अघकलियां—कर दलियां-गुण खिलियां सुखमिलियां—हे जिनजी—तुमसम देव नहीं जग

दूजोरे-भविजनके मन भाय-आतम शिवसुख थाय-सुख पाय-आनंद थाय-वल्लभ गाय-मेरे जिनजी-४

(चाल नाटक-तेरी छलबल)

करो दर्शन जिनंद-होवे आतम आनंद-कटे जगतके फंद, मानो चतुरसुजान-धरो मन प्यार-प्रभु लगन लगावो-दर्शनसें शिवसुख पावो मेरी जान-प्रभु दर्शन महान-वल्लभ आतम सुजान-करे अपने समान-होवे वाह वाह वाह. २ इति-

(चाल नाटक-ऐसे धोखा देनेवाले.)

धन धन पूजा करने वारे, मैंने देखे जिनके प्यारे। ऐसे जिन आज्ञाके धरनेवारे। पूजा प्रभुकी करने वारे, मिथ्या मतके हरने वारे, भवसागरसे तरनेवारे, पूजा करने वारे-मैंने देखे जिनके प्यारे मानो निज आतमके गुण वरनेको-दुःख हरनेको-

सुख करनेको–जिन गुण शुभ जो गाते है वो–शिववरनेको–भवतारनेको–धारी धारी जिनकी वानी–प्यारी प्यारी सुखकी खानी–मानी हैं सुमतिकी वानी–त्यागी है कुमतिकी वानी–पूजा करने वारे–ऐसी पूजा प्रभुकी भारी–फल मन वंछित देती है–जिससे हित सुख होवे–आगम गणधर गावे–जिनगावे–पूजा पूजा प्रभुकी पूजा–तीर्थंकर भगवानकी पूजा–पाप कर्मको देवे धूजा–भवसागर तरनेको भूजा-धन नरवो जिनको यह सूजा-रायपसेणी सार जीवा भिगमको धार । ज्ञाताजीकों विचार, पूजा सतरा प्रकार करो करो पूजा प्यारे–आतम वल्लभ करने वारे–पूजा करने वारे० ॥ २ ॥

—०इति०—

चाल–भरत मछंदर.–

जयजगदीश्वर–जगपरमेश्वर–वार वार बलिहारीहै । तुमसेवासें शिवसुख मेवा–पाते भविनर–झट–झट–झट–पाते भविनरनारी हैं– ॥ दीनदयाल दयानिधि करुणा–सागर गुण भंडारीहै । तुमसम

और नहीं कोई जगमें–सरणा तुमरी धारी है ॥ तुम सेवा पूजा करनी हितकारी है–तुम वंदन पूजन करना सुखकारीहै–मूर्ति प्यारीहै–आनंदकारीहै–प्रभु मूरति मनहरनारी है–आतम वल्लभ उपगारी है–धरो प्रभु ध्यान धरो प्रभुध्यान–पार्श्वभगवान्–पार्श्वभगवान्.

(श्री ऋषभदेव जिनस्तवन.)

शरणे आयोरे प्रभुजी अर्ज : अवधारनारे
श० अंचली.

आठकरनमे नाचनचाया, लखचौरासी योनि भमाया, हत हत करमैं अति दुख पाया, भवसमुद्रसे तारनारे श० ॥१॥ नंदन नाभी कुलकर तारो क्षयकरीकर्म कियो उजियारो, रतन धर्म प्रगटावनहारो, कर्ता नाम संभारनारे श०॥२॥ दर्शन सम्यग् ज्ञान उजागर, मींत आनादीको मैं चाकर, खबर लीजीये करुणासागर, तुमप शरणा धारनारे श० ॥ ३ ॥ विष्णु ब्रह्मा हरिहर नामी, विना आपके

सब हैं कामी, विरुद तुमारा अंतरजामी, जन्ममरण दुखटारनारे शा० ॥४॥ जयपुरमें प्रभुद-र्शन पायो, जयजयकार करी हरखायो, जन्मजन्मके पाप नसायो, कर्म रिपुको निवारनारे शा० ॥ ५ ॥ यमजन्म जरा मरणादिनिवारो, यह अरदास मेरी अवधारो, यह सेवक है दीन तिहारो, निज आ-तम सम कारनारे शा० ॥ ६ ॥ जीवन आतम शि-वसुख पावे, जीवन हर्ष भरी हरखावे, जीवन व-ल्लभ पदवी पावे, विमल चरण प्रभु वारनारे शा० ॥ ७ ॥ इति०

श्री चतुर्विंशति जिनस्तवनम्

(देशी--विमलाचल नितु वंदाये)

प्रात समय नित्य उठीने, वंदु चउवीस जिनंदा; भव भव पाप पलायके, बहु होत आनंदा ॥ प्रा० १ ॥ ऋषभ अजित स[illegible]व प्रभु, चौथा जिन अभिनंदा; सुमतिनाथ पदम प्रभु, श्री सुपार्श्व मुनींदा ॥प्रा० २॥ चंद्र सुविधि शीतल प्रभु, श्री श्रेयांस जिनंदा; वासुपूज्य विमल प्रभु, श्रीश्रीअनंत जिनंदा ॥ प्रा० ३॥

धरमनाथ जिनवर भला, सिमरे जो भविचंदा; धरम तणेही प्रभावसे, कटे भवभव फंदा ॥प्रा०४॥ शांति कुन्थु अर जिनवरा, तीनों चक्री सोहंदा, मल्लिनाथ मुनि सुव्रता, नमि नेमि देवींदा ॥ प्रा० ५॥ पार्श्वनाथ तिहुअण धणी, श्रीश्रीवीर जिनंदा ॥ कर्म खपावी मुगते गया, वर्त्तमान जिनंदा ॥प्रा०६॥ मन वच काया शुद्ध करी, सिमरे जो भवि वृंदा॥ आतमराम रमण हुए, वल्लभ हर्ष अमंदा ॥प्रा०७॥ इति—:०:—

श्री अजितनाथ जिनस्तवनम्.

(आत्माराम महाराज मुनि इस कलयुग में अवतार हुए यह देशी ।)

अजितनाथ महाराज प्रभु, अब भव सागरसे पार करी । काल अनंता वीत गया पिण, तुम चरणी नहिं आख परी । अंचलि। अब मेरो पुण्योदय जागयो । मोह महामल्ल मुझसे भाग्यो जिस दिन तुम चरणोंमें लाग्यो । रागद्वेष अज्ञान हरी । अ०१ तुम प्रभुभवो

भवके भयं भंजन। भविजन के तन मन को रंजन। मदन कदन दुखदाई गंजन। गये रस इंद्री विषय जरी ॥ अजि० २। जिन ब्रह्मा हरि हर शिव शंकर। वीतराग प्रभु राम शिवंकर। अचल अटल अज अमर सुहंकर। परमातमपद शुद्ध वरी। अजि०३। जो सेवक निज सम नहीं करता। सेवा कौन कहो तस करता। क्या तस सेवासे फल करता भस्म बीच घृत बूंद परी ॥ अजि० ४। तूं प्रभु निज सेवक सम-कारी। भवजलधिसे पार उतारी वल्लभ आतम रूप दातारी। शुभ पंचम गति बीच धरी ॥ अजि० ५ ॥ इति०

श्री सुमतिनाथ जिनस्तवनम्.

(लावणी चाल—अपने पदको तज कर)

सुमतिनाथ शिव पाथ प्रभुका, साथ भवि करना चाहिये। प्रभु मदनमाथ है, रोग के नाश क्वाथ पीना चाहिये। अंचली। रातदिवस गफ-लत में प्यारे, गाफिल होना ना चाहिये।

नहीं खबर काल की, चेतकर निज मन मल धोना चाहिये १ भेद ज्ञान साबन कर पानी समता रस लेना चाहिये । अभ्यंतर चेतन, रजक निज गुण चीवर धोना चाहिये ॥ २ ॥ जड चेतन के ज्ञान से प्यारे, मिथ्या भ्रम मिटना चाहिये । अद्वैतवाद से, कभी नहीं करम पुंज कटना चाहिये ॥ ३ ॥ निश्चय और व्यवहार है साधक, मुख्य गौण होना चाहिये । एकांत वाद से, जगत में धरम करम खोना चाहिये ॥ ४ ॥ निश्चय से चेतन ही ध्याता, ध्यान ध्येय कहना चाहिये । निश्चयका साधक, शुद्ध व्यवहार साथ गहना चाहिये ॥ ५॥ परउपकारी अति सुखकारी, सरण प्रभु धरना चाहिये । कर्मारि प्रभु के, ध्यान से करम वैरी टरना चाहिये ॥ ६ ॥ शुद्धदेव गुरु शुद्ध धरमको, धार हिये तरना चाहिये । आतम सुखदाई रूप वल्लभ आनंद वरना चाहिये ॥ ७ ॥

गूहली १.

सुण साहेली विजयानंद सूरीसरना गुण गाने। गुरुगुण गाता मन हुलसे तन विकसे आनंद थाने ॥ सुण० आंकणी क्षत्रीय कुले अवतार लियो—क्षत्रीय धर्ममें चित्त दियो—सरणागत वत्सल सफल कियो—सुण० ॥ १ ॥ वैराग भाव संजम धार्यूं—जेणे मदन कदन जडथी जार्यूं—ब्रह्म चर्य व्रत दृढ थइ पार्यूं—सुण० ॥ २ ॥ मुनि गणपति गुणपति मनमोहे—वचनामृतथी भविजन बोहे—उडुगण शशि सम यतिपति सोहे—सुण० ॥ ३ ॥ शुद्ध ज्ञानादि गुणना दरिया—शुद्ध संयम किरियाथी भरिया—नर नरपति जस चरणे परिया—सु० ॥४॥ सर्वोत्तम गुण खानि जानी—सूरि पदवी संघे मानी—थया युग प्रधान सम अति ज्ञानी—सु० ॥५॥ गुर्जर मरुदेश पंजाव फरी—तार्या भविजन उपदेश करी— वंदो गुरु चरणी सीस धरि—सु० ॥६॥ ओगनीसो चौसठना वरसे—गुणगाया अमृतसर हरसे—कहे वल्लभ गुरु सेवक तरसे—सु०॥७॥ इति०

गूहली २.

सुण साहेली मुनि गुण मकरंद भ्रमर परे पीले ने। मुनिमुख जोतां सुख आवे दुःख जावे समझी लेने॥ सुण०॥ आंकणी॥ शुद्ध संयम मारगना गामी–धर्मध्यान शुक्ल ध्यानना स्वामी। त्रण गुप्ति तणा जे छे धामी–सुण०॥ १॥ मुनिचार कषायने दिये जारी–वलि विकथा चार दिये टारी। जेणे चार समाधि दृढ धारी–सुण०॥ २॥ मुनि पांच महाव्रतना धारी–नित्य सेवे पांच सदाचारी। दिये पांच प्रमाद मनोवारी सुण०॥ ३॥ पांच समिति तणा अति छे रागी–पांच इन्द्री विषयना छे त्यागी– श्रुति ज्ञान अपूर्वमां छे लागी सुण०॥ ४॥ षट्काय तणा मुनि हित कारी–समता रस गुणना भंडारी। भय सात थकी मनडुं वारी। सुण०॥ ५॥ आठ पवयण माय सेवा करता। नव विध ब्रह्मचर्यमें अनुसरता। दश विध यति धर्ममें रहे चरता–सुण०॥ ६॥ इत्यादि गुण गण ना धारी–सुर गुरु पण पामें नहीं पारी। एहवा

मुनिजननी जाउं बलिहारी–मुण० ॥ ७॥ तपगच्छ गगनमणि सम राजे–विजयानन्द सूरि जग गाजे। जेना नामथकी भवि अघ भाजे–मुण०॥८॥ शिष्य लक्ष्मी विजय लक्ष्मी दाता-तस हर्षविजय हर्षे राता। तस शिष्य वल्लभ मुनि गुण गाता-मुण०॥९॥ इति०

गूहली २.

साहेली सांभलो गुरु वाणी–एतो मोक्षतणी छे निशानी। साहेली० आंकणी–तीर्थंकर अर्थ प्रकाशे। गणधर गूंथे प्रभु पासे। तरे नरनारी जे गासे। साहेली० ॥ १ ॥ कह्या धर्मना दोय प्रकार। मुख्य साधु धर्म अधिकार। कहुं श्रावक धर्म विचार। साहेली० ॥ २ ॥ श्रावकना व्रत छे बार । जिहां समकित मूल आधार। विना समकित लींपणुं छार। साहेली० ॥३॥ शुद्ध देव गुरु ओलखाण। शुद्ध धर्मनो थाय सुजाण। उग्या मिथ्यात्व नाशक भाण। साहेली० ॥ ४ ॥ कह्यो शास्त्रमां अति विस्तार। घणा अल्प रुचि नरनार। माटे वर्णवुं समकित सार। साहेली० ॥ ५ ॥ चारित्र चूकयो शिव जावे।

अजरामर पदवी पावे । एतो समकित शुद्ध प्रभावे । साहेली० ॥ ६ ॥ द्वादश मूल भेद कहावे । सडसठ भेद उत्तर थावे । एम ऋषि मुनिजन गण गावे । साहेली० ॥ ७ ॥ त्रण चिन्ह सद्दहणा चार । दश विनय शुद्धि त्रण धार । पांच दोष तणो परिहार । साहेली० ॥ ८ ॥ कहे आठ प्रभावक सांच । नहीं लागे धर्म ने आंच । भूषण पांच लक्षण पांच । साहेली० ॥ ९ ॥ जयणा भावना आगार । षट् षट् षट् स्थान विचार । भेद समकित सडसठ धार । साहेली० ॥ १० ॥ आतम समकित घर आवे । ज्ञान लक्ष्मि हर्ष मनावे । ध्यान चरण वल्लभ मन लावे । साहेली० ॥ ११ ॥ —इति —

गूहली ४.

सुण साहेली गुरु मुख वाणी सुखनी खानि जाणी । करी अघ हानि जीव वरे सुख दानी शिव पटरानी–सुण० आंकणी– संसार असार छे दुख दरियो । जरा रोग सोग जलधी भरियो ।

जेणे धर्म कर्यो ते नर तरियो--सुण० ॥ १ ॥ शुद्ध देव गुरु धर्म शुद्ध मानी। श्रधा शुद्ध निज मन में आनी। करो व्रत पच्चक्खाण भवि प्रानी--सुण० ॥ २ ॥ धन्य देव जिनेश्वर गुरु मेरे। कहे द्वादश व्रत श्रावक केरे। जे पाले टाले भव फेरे-सुण० ॥ ३ ॥ जे त्यागे हिंसा थूल थकी। नवि बोले झूठुं मूल थकी। परद्रव्य गणे तुच्छ धूल थकी--सुण० ॥ ४ ॥ परदारा त्यागे शुद्ध मना। स्वदार संतोष आनंद घना। करे पंचम व्रत मर्याद धना--सुण० ॥ ५ ॥ व्रत छट्ठु दिशि परिमाण भणो--वलि सातसुं भोगोपभोग गणो। करो त्याग अभक्ष बावीस तणो। सुण० ॥ ६ ॥ अनर्थ दंड आठमुं जानो। सामायिक नवमुं मन आनो। देशावकाशिक दशमुं मानो--सुण० ॥ ७ ॥ अगीयारमुं पौषध व्रत लईये। बारमुं शुद्ध दान मुनि दईये। बारमे देवलोक सुधी जईये--सुण० ॥ ८ ॥ धन्य आतम आनंद व्रत धारी। वरे शिव लक्ष्मी भवि नरनारी। गुरु हर्ष वल्लभ दिल में धारी--सुण० ॥ ९ ॥ --०इति०--

गूंहली. ५

सजनी मोरी, पर्व पजुसण आव्यांरे ।
" भव्य जीव मन भाव्यांरे ॥
" द्वीप नंदीसरे जावेरे ।
" देव अट्ठाइ मनावेरे ॥ १ ॥
" जीवा भिगमनो पाठरे ।
" करे विविध पणे ठाठरे ॥
" गाम नगर नर नाररे ।
" निज शक्ति अनु साररे ॥ २ ॥
" दान शियल तप भावरे ।
" भवजल तारण नावरे ॥
" पूजा प्रभाव ना थायरे ।
" मनमें हर्ष न मायरे ॥ ३ ॥
" साधु रहे चउमासरे ।
" सफल थई मन आसरे ॥
" लोच करे मुनिराजरे ।
" अभ्यंतर गुण काजरे ॥ ४ ॥
" सोहागण वदे नाथरे ।

सजनी मोरी, एकज धर्म छे साथरे ॥
" कल्प घरे पधरावोरे ।
" लइये जन्मनो ल्हावोरे ॥ ५ ॥
" साडंवर गुरु पासेरे ।
" आविये अति उल्लासेरे ॥
" ज्ञान भक्ति शुभ कीजेरे ।
" गुरुहस्ते कल्प दीजेरे ॥ ६ ॥
" कीजे अर्ज करजोडीरे ।
" संभलावो कर्म तोडीरे ॥
" सूत्र कल्प व्याख्यानरे ।
" सुणिये अमिय समानरे ॥ ७ ॥
" धर्म सारथी जाणोरे ।
" श्री देवी स्वप्न वखाणोरे ॥
" स्वप्न पाठक बोलावेरे ।
" जन्म श्री वीरनो थावेरे ॥ ८ ॥
" प्रभुए दिक्षा धारीरे ।
" मोक्ष गये कर्म जारीरे ॥
" श्री आदिनाथ वखाणरे ।
" पट्टावली छे प्रमाणरे ॥ ९ ॥

सजनी मोरी सामाचारी प्रधानरे ।
,, बारसो नव व्याख्यानरे ॥
,, संवत्सरी पडिकमियेरे ।
,, सर्वा पराधने खमियेरे ॥१०॥
,, आतम आनंद भरियेरे ।
,, शिव लक्ष्मी हर्ष वरियेरे ॥
,, वल्लभ धर्म मनावोरे ॥
,, आतम हर्ष वधावोरे ॥११॥

—०इति०—

गूहली ६.

सजनी मोरी सूरि श्री विजयानंदरे ।
,, नमन करो सुख कंदरे ॥
,, गावो मुनि गुण साररे ।
,, धन्य धन्य यति अणगाररे ॥१॥
,, पिंड विशुद्धि पालेरे ।

सजनी मोरी दोष छुडताळीस टाळेरे ॥
" बिनकारण जे दोषरे ।
" कारणे ते निर्दोषरे ॥२॥
" दायक ग्राहक दोयरे ।
" आतुर उपमा जोयरे ॥
" ए जिन गणधर बोलरे ।
" उद्गम दोष छे सोलरे ॥ ३ ॥
" आगारिकथी प्रचाररे ।
" उद्गम दोष विचाररे ॥
" साधु निमित्ते पकावेरे ।
" आधाकर्म कहावेरे ॥ ४ ॥
" बाकी कसर रही थोडीरे ।
" औद्देशिक मुनि जोडीरे ॥
" दूषित सुझमां आवेरे ।
" पूई कर्म ते थावेरे ॥ ५ ॥
" घर मुनियोग्य बनावेरे ।
" मिश्र दोष फरमावेरे ॥
" पृथक् निमित्त मुनि राखेरे ।
" स्थापना दोष ते भाखेरे ॥ ६ ॥

सजनी मोरी जीमण पाछल आगेरे ।
" प्राभृत दूषण लागेरे ॥
" अंधकारथी प्रकाशेरे ।
" प्रादुःकर दोष थाशेरे ॥७॥
" साधु निःमित्त खरीदेरे ।
" दूषण क्रीत धरीदेरे ॥
" उद्धार लावीने दीजेरे ।
" प्रामित्य दोष पतीजेरे॥ ८ ॥
" अदला बदली कीजेरे ।
" परिवर्त्ति दोष कहीजेरे॥
" उपाश्रयमां लावेरे ।
" दोष अभ्याहृत भावेरे॥ ९ ॥
" बंध घटादिक तोडेरे ।
" उद्भिन्न मुनि मन मोडेरे ॥
" माल मेडीथी उतारेरे ।
" मालापहृत मन धारेरे ॥१०॥
" विन इच्छा भृत्य चीजरे ।
" आछिद्य दोषनुं बीजरे ॥
" साधारण विण आणरे ।

सजनी मोरी अनिसृष्ट दूषण जाणीरे ॥ ११ ॥
" क्षेप आवण निज धार्धुंरे ।
" अध्वपूरक ते विचार्युंरे ॥
" सोल ए उद्गम दोषरे ।
" टाले मुनि मन तोषरे ॥ १२ ॥
" आतम आनंद पावेरे ॥
" वल्लभ हर्ष मनावेरे । इति०

गृहली ७.

सजनी मोरी दोष उत्पादन जाणोरे ।
" साधु निमित्त पिछाणोरे ॥
" इति गृही बाल रमावेरे ।
" धात्रिदोष लगावेरे ॥ १ ॥
" संदेशो पहुंचाडेरे ।
" दूती दोष लगाडेरे ॥
" ज्योतिष अर्थ प्रकासेरे ।
" निमित्त दोष विलासेरे ॥ २ ॥
" कुल जाति ओलखावेरे ।

सजनी मोरी दोष आजीव कहावेरे ॥

" इष्ट दायक गुण गावेरे ।

" दोष वनिपक थावेरे ॥ ३ ॥

" चिकित्सा सातमो कोहरे ।

" मान माया अने लोहरे ॥

" पूर्वापर दाताररे ।

" संस्तव दोष अगीयाररे ॥ ४ ॥

" विद्या मंत्र ने चूर्णरे ।

" द्रव्य योग परिपूर्णरे ॥

" गर्भ स्तंभन परिपातरे ।

" मूल चरणनो घातरे ॥ ५ ॥

" सोल उत्पादना दोषरे ।

" सेवे न मुनि निर्दोषरे ॥

" दश छे एषणा दोषरे ।

" टाले मुनि गुण पोषरे ॥ ६ ॥

" दूषण शंका विचाररे ।

" सचित्त चोपड्यो आहाररे ॥

" सचित्त उपर राख्योरे ।

" निक्षिप्त दोष ते भाख्योरे ॥ ७ ॥

सजनी मोरी ढांक्यो सचित्तथी जेहरे ।
,, दोष पिहित छे तेहरे ॥
,, पात्रांतरथी देवरे ।
,, संहृत दोष न लेवेरे ॥ ८ ॥
,, बालक वृद्ध अपंगरे ।
,, आंधळो कांपतो अंगरे ॥
,, षट्काय हिंसा काररे ।
,, उन्मत्त गर्भिणी नाररे ॥ ९ ॥
,, इत्यादिक घणा भेदरे ।
,, दायक दोषना वेदरे ॥
,, मिश्र अपरिणित द्रव्यरे ।
,, लेवे न देव भव्यरे ॥ १० ॥
,, खरड्या वासण हाथरे ।
,, लिप्त दोष कहे नाथरे ॥
,, देतां क्षितितल नाखेरे ।
,, दोष ते छर्दित भाखेरे ॥ ११ ॥
,, साधु श्रावक मिल दोयरे ।
,, दश दोष एषणा जोयरे ॥
,, पांच मांडलीना दोषरे ।

सजनी मोरी त्यागे मुनि धरी तोषरे ॥ १२ ॥
" अंदर बहिर मकानरे ।
" मेल द्रव्यांतर जानरे ॥
" रस गृद्धि वस थाईरे ।
" संयोजना दुःख दाईरे ॥ १३ ॥
" भोजन करे अप्रमाणरे ।
" दूषण बीजूं वखाणरे ॥
" वस्तु वखाणी खायरे ।
" अंगार दोष कहायरे ॥ १४ ॥
" खाय वखोडी अजानरे ।
" दूषण धूम समानरे ॥
" छ कारणने विचारीरे ।
" आहार करे व्रत धारीरे ॥ १५ ॥
" विन कारण जे आहाररे ।
" करतां दूषण धाररे ॥
" आतम मुनि बलिहाररे ।
" वल्लभ हर्ष अपाररे ॥ १६ ॥

—इति—

गूहली ८.

(धारणी मनावेरे एदेशी)

धन्य धन्य बलिहारी गुरु तुम तणीरे, गुरु गुण रयण भंडार । पुण्य संजोगे भविजन ने मलेरे, मेलो गुरु संसार ॥ धन्य—आंकणी० ॥१॥ ससति चरण करण ससाति प्रतेंरे, पाले निरतिचार। शुभ उपयोगे दूषण टालीनेरे, लेवे शुद्ध आहार ॥ धन्य० ॥ २ ॥ निर्मम निर्मद निर्मोही गुरुरे, क्रोध नहीं नही मान । कपट रहित थई आतम साधतारे, धरता निर्मल ध्यान ॥ धन्य० ॥ ३ ॥ एहवा गुण गुरु गुरुजी पधारसेरे, करसे दलीय चोमास। मनना मनोरथ पूरण साधसेरे, फलसे सघली आस ॥ धन्य० ॥ ४ ॥ हुझ मन आसारे गुरुजी हती घणीरे, सूणासु सूत्र वखान । मन मुरझाणुंरे आज ए सांभलीरे, वात विहारनी कान ॥ धन्य० ॥ ५ ॥ नेत्र गले जले छाती वले हिडेरे, सूझे नहीं काम काज । मानो विनवुं वे कर जोडीनेरे, तारण तरण

जहाज ॥ धन्य० ॥ ६ ॥ परहित कारी परमदयाळ छोरे, करता पर उपकार । करुणानिधि करुणा करो मुझ भणीरे, न करो आप विहार ॥ धन्य ॥ ॥७॥ मुनि कहे सांभळ गुण भरी श्राविकारे, मुनि स्वभाव सम जान। विन कारण मुनिजन रेहता नथीरे एकने एकज थान ॥ मुनि० ॥ ८ ॥ ज्ञान घटे घटे ध्यान क्रिया घटेरे, वळी घटे आदरमान॥ संचय परिचय वाधे गृही तणोरे, वाधे अति अप ध्यान॥मु०९॥ ब्रह्मचर्य व्रतमां शंका पडेरे, टूटे व्रत पच्चखाण । पांच महा व्रत मूळथी नवी पळेरे, पळे नहीं प्रभुनी आण ॥ मुनि० ॥ १० ॥ ए कारण मुनिजन रेहता नथीरे, करे नव कल्पी विहार। आठ महीना शेषा-काळनारे, एक कल्प मास चार ॥ मुनि० ११ ॥ इम कही पुस्तक पात्रां बांधिनेरे, थया मुनि झट तैयार । धर्म लाभ देइ मुनिजी संचर्यारे, करवा उग्र विहार ॥ धन्य ॥ १२ ॥ निर्मोही गुरु धर्मना नेहथीरे, वलि पण दीजो दिदार । आतम वल्लभ हर्ष वधामणांरे, जिन शासन जय कार ॥ धन्य ॥ ॥ १३ ॥ —०इति०—

गूहली ८.

मोरा गुरुजीरे हवे करो आप विहार मो०

आंकणी—आप गुरु हूं श्राविकाजीरे, कहेवा नथी अधिकार। तो पण कहुं गुण जाणीनेजीरे, सीधो मननो विचार—मोरा० ॥ १ ॥ एक स्थान रेहता नथीजीरे, हानि गुणना भंडार। गाम नगरमें विचरताजीरे, करे नव कल्पी विहार ॥ मोरा० ॥ २॥ ज्ञान घटे परिचय थकोजीरे, वलीय वधे अपमान। संशय परिचय वधे घणोजीरे, घटे मुनिजननुं मान ॥ मो० ॥ ३ ॥ शीलतणी शंका पडेजीरे, वाधे मोहनुं जोर। त्याग करी संसारनोजीरे, दृष्टि न करो तस ओर ॥ मोरा० ॥ ४ ॥ राग द्वेष दोय चोरटाजीरे, लाग्या छे तुम लार। नाश करे संयमलणो जीरे, जेकरे अग्नि कण तृण भार ॥मोरा०॥ ५॥ धन्य धन्य ते नरनारीने जीरे, साचा वखान। आतम लक्ष्मी पदधरेजीरे, वल्लभ हर्ष अमान—मोरा० ॥ ६ ॥

—०इति०—

गूहली १

सजनी मोरी—धन्य दिवस है आजरे ।
" दर्शन हुए गुरु राजरे ॥
" चौवीसो पांत्रीस जानोरे ।
" संवत विर बखानोरे ॥ १ ॥
" आलम चौद विचारोरे ।
" विक्रम वरसां धारोरे ॥
" उन्नीसौ छासठ वर्षेरे ।
" संघ अति मन हर्षेरे ॥ २ ॥
" पालनपुर शुभ ठामरे ।
" पार्श्व पल्हवीया धामरे ॥
" पुण्य उदय संघ आयारे ।
" वल्लभ विजय गुरु रायारे ॥ ३ ॥
" श्री विजयानंद सूरिरे,
" लक्ष्मी विजय शिष्य धूरिरे ॥
" हर्ष विजय हर्ष कारीरे ।
" गुरु भव पार उतारीरे ॥ ४ ॥
" तस शिष्य वल्लभ नामरे ।

सजनी मोरी—करे जग वल्लभ कामरे ॥
" ज्ञान गुरु समझायारे ।
" संघ सकल एक थायारे ॥ ५ ॥
" करे कुरीत सुधारारे ।
" देशना अमृत धारारे ॥
" नंदी सूत्र सुख कारे ।
" जिन गणधर फरमायारे ॥ ६ ॥
" किया वर्णन विस्ताररे ।
" ज्ञानके पांच प्रकाररे ॥
" कहुं शंक्षिप्त विचाररे ।
" ज्ञान प्रथम मति साररे ॥ ७ ॥
" अडवीस श्रुत चवद भेदरे ।
" वीस कहे जिन वेदरे ॥
" चार अबोले श्रुत बोलरे ।
" निजपर रूपको खोलरे ॥ ८ ॥
" तिण श्रुत ज्ञान प्रधानरे ।
" दर्शन चरण निदानरे ॥
" भेद असंख्य ओहिनाणरे ।
" षट भेद मोटे प्रमाणरे ॥ ९ ॥

सजनी मोरी–मन पर्यव दोय भेदरे।
" केवळ ज्ञान अभेदरे ॥
" चार क्षयोपशम जानोरे।
" क्षायक केवल मानोरे ॥ १० ॥
" आतम लक्ष्मी थावेरे।
" वल्लभ हर्ष मनावेरे ॥
" विमल चरण गुरु ध्यावेरे।
" धन्य नरनार जो गावेरे ॥ ११ ॥

—०इति०—

गूंहली १०.

(मल्लि जिन नाथजी व्रत लीजेरे ए देशी.)

सुनो सखि गुरु वल्लभ अब पायारे। जेणे मुझ मन हर्ष निपाया–सुनो० आंकणी– गुरु बाल थकी ब्रह्मचारीरे, लियें पांच महा व्रत धारीरे। दिये राग द्वेष मद टारी–सुनो० ॥ १ ॥ धन्य धन्य छे मुझने आजरे, जेना वल्लभ छे सिरताजरे। हवे लइशु शिवपुर राज–सुनो० ॥ २ ॥ धन्य मात इच्छा देवी जायारे, धन्य दीपचंद कुल जायारे। नमो वल्लभना

नित्य पाया सुनो० ॥३॥ गुरु अमृत ज्ञान पिलायारे, भविजनने शांत करायारे। एहवा वल्लभ गुरु गुण गाया सुनो०॥४॥ गुरु आतमराम विचरंतारे, सखि वल्लभ गुरु गुणवंतारे। आव्या पालणपुर जयवंता-सुनो० ॥ ५ ॥ सखि विमलने वल्लभ मलियारे, तेना रोग सोग सब टलियारे। गया कर्म रिपु सब वलिया-सुनो० ॥ ६ ॥ गुरु आतम वल्लभ जानीरे, जेने जोवो छे शिवपटरानीरे। तेतो विमल विजय पद्‌ठानी-सुनो० ॥ ७ ॥ —०इति०—

गूहली ११.

(पनिहारीनी देशी.)

श्री वल्लभ विजय महाराजजी मोरा बालाजी,
तारन तरन जहाज बालाजी ॥
पांच महा व्रत पालते मोरा बालाजी,
धन धन गुरु महाराज बालाजी ॥ १ ॥
माया ममता परिहरी मोरा बालाजी,
क्रोध लोभ किया दूर बालाजी ॥

विषय विकार निवारके मोरा बालाजी,
राग द्वेश चकचूर बालाजी ॥ २ ॥
वाणी अमृत सारखी मोरा बालाजी,
वल्लभ सब मन भाय बालाजी ॥
दर्शन करी गुरु राजका मोरा बालाजी,
तृप्त नहीं मन थाय बालाजी ॥ ३ ॥
ग्राम नगर गुरु विचरते मोरा बालाजी,
करते परउपकार बालाजी ॥
ऐसे श्री गुरुराजकी मोरा बालाजी,
महिमाका नहीं पार बालाजी ॥ ४ ॥
संगम तीरथ श्री गुरु मोरा बालाजी,
ज्ञान तणा भंडार बालाजी ॥
ऐसे गुरु महाराजको मोरा बालाजी.
वंदो वारंवार बालाजी ॥ ५ ॥
आतम वल्लभ मिलनको मोरा बालाजी,
शिवलक्ष्मी हरखाय बालाजी ॥
चरण शरण गुरु राजके मोरा बालाजी,
विमल विजय गुण गाय बालाजी ॥ ६ ॥

—०इति०—

लावणी.

अरी तुम देखो री नैना, गुरु देखत तन मन चैना ॥ अरी० ॥ अंचली ॥ गुरु गुरु जग जन कहे, गुरु गुण जाने न कोय । जो गुरु गुणको जाने सी, पावे शुभ गुरु सोय ॥ प्रथम गुरु गुण करले जैना, जिसे सद्गुरु जी तैं कैना ॥ अरी० ॥ १ ॥ पांच महाव्रत पालते, दया तना भंडार, झूठ कभी नहीं बोलते, त्यागी चोरी नार । मोह ममता में नहीं पैना दाम कौडी भी नहीं लैना ॥ अरी० ॥ २ ॥ माधुकरी भिक्षा चरे, करे धरम के काम ॥ शत्रु-मित्र दो सम गिणे, जपे निरंतर नाम ॥ निरंतर निज गुण में रैना, करम दलसे निसदिन रैना ॥ अरी० ॥ ३ ॥ तप जप संयम साधते, ज्ञान ध्यान परवीन ॥ शुद्ध समाधि साधके, अनुभव रस में लीन॥ नहीं डेरा पाके बैना, निरंतर रमतेही रैना ॥ अरी० ॥ ४ ॥ इस कलयुग के बीच में ऐसे गुरु गुण धाम ॥ हितकारी जग जीव के, होये आतमा राम ॥ किसीने सरणा नहीं दैना, गुरु सरणा वल्लभ लैना ॥ अरी० ॥ ५ ॥